IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

समकालीन आदिवासी स्वास्थ्य नीतियाँ एवं योजनायें

चतुर्भुज विश्वकर्मा
शोधार्थी–भूगोल, शोध केन्द्र शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
डॉ. सी. पी. तिवारी
सेवानिवृत्त प्राध्यापक भूगोल, शासकीय महाविद्यालय , रायपुरकर्चुलियान, जिला–रीवा (म.प्र.)

शोध–सारांश

किसी राष्ट्र के विकास के मूल में वहां के लोगों के स्वास्थ्य की प्रमुख भूमिका होती है। बीमारियों के स्वरूप तथा प्रकृति क्षेत्र विशेष के पर्यावरण के अनुरूप परिवर्तित होती रही है। पर्यावरण की परिवर्तनशील प्रवृत्तियों के अनुरूप शारीरिक कार्यक्षमता यथावत बनी रहे, इसके इसके किये विभिन्न प्रकार के उपाय किये जाते हैं। इस प्रकार के उपाय निश्चित कार्य प्रणाली द्वारा सम्पादित किया जाता है। पूर्व से आभासित रोगों की रोकथाम के लिए यदि कार्य योजना का स्वरूप तैयार नहीं किया जाएगा तो बीमारियों के वक्त बहुत ही संवेदनशीलता की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। एक ओर जहाँ रोगों के पहचान और रोकथाम में अनावश्यक देरी से कार्य क्षमता प्रभावित होगी वहीं रोगों के भय के कारण घबराइट से जनसंख्या का पलायन प्रारंभ होने लगता है ये सिलसिला कुछ दिनों/महीनों में ही उस क्षेत्र को एक बीरान प्रदेश के रूप में परिवर्तित कर देता है। इस विसंगत से बचने के लिए।

मुख्य शब्द :–समकालीन, आदिवासी, स्वास्थ्य, नीतियाँ, योजनायेंत्र जनसंख्या, पर्यावरण, बीमारियाँ, प्रकृति, क्षेत्र आदि।

संदर्भ स्रोतः–

1. वी.के. राव एवं श्रीवास्तव – पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर 2002
2. जी.सी. सिंघई– चिकित्सा भूगोल, वसुन्धरा गोरखपुर 1993, पृ. 54
3. जगजीवन पाण्डेय– बघेलखण्ड प्रदेश के आम प्रतिरूप का बीमारियों पर प्रभाव अप्रकाशित शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा 2003 पृ. 154
4. जी.सी. सिंघई – चिकित्सा भूगोल, वसुन्धरा गोरखपुर 1993 पृ. 54